ONE DAY SEMINAR ON
FOREST FIRE AND IT'S MANAGEMENT
ORGANIZED BY
HIMALAYAN FOREST REASEARCH INSTITUTE, SHIMLA
ON 8th FEBRUARY 2018

A seminar on "Forest Fire and Its Management" was organized by the Institute on 8th February 2018. The official of State Forest Department, members of NGOs, researchers from HPU Shimla, Scientists, officers and research staff of HFRI participated in the seminar. The main themes of the seminar were:

- Identification of the causes and impact of the forest fire
- Prevention, management and control of forest fire
- Identification of safety measures to be taken during forest fire

The seminar was inaugurated by Sh. Amar Chand Sharma, IFS, PCCF (Management), Himachal Pradesh Forest Department. Addressing the participants, he congratulated the organizers for selecting a topic of immense significance for the seminar and affirmed the fact that fire effects irrepairable loss to the flora and fauna. Sensitization of common people in general and researchers, forest department functionaries in particular is of utmost significance. He called upon forest department, research organizations and civil society to tackle the issue of the forest fires with the concerted efforts.

At the outset Dr. Ranjeet Kumar, organizing secretary of seminar elaborated upon the need of the seminar to sensitize the society towards conservation and management of biodiversity in forest fire affected areas.

Dr. Ranjeet Singh, Scientist-G welcomed the Chief Guest, resource persons, participants and briefed about the importance of forest fire management. In the end of inaugural session, Dr. R. K. Verma, Scientist-G gave the vote of thanks.

In the forenoon technical session, Dr. Sunil Chandra, Deputy Director (SM), Forest Survey of India, Dehradun gave a presentation on the status of forest fire in India and its management. He stressed upon the need for developing infrastructure for effective communication during forest fire management in state forests departments.

Dr. Joachim Scumerbeck, GIZ, Shimla linked forest fires with livelihood, its impact on environment and its control in his presentation through skype from Germany.

Dr. Ombir Singh, Scientist, Forest Research Institute (FRI), Dehradun talked about initiatives on Fire fighter safety, equipments and fire suppression. He said that there is a need for developing such equipments which require less manpower and are also cheaper in forest fire management.

Dr. Ranjeet Kumar, Scientist-E gave a presentation on forest fire in chir pine forests and its management in Himachal Pradesh. He said that forest fires are one of cause for degradation of forests in India, especially chir pine forests of North India, and affects biodiversity and regeneration trend of existing vegetation.

In the afternoon technical session, Shri Bhagat Ram, Ph.D. Scholar from HPU, Shimla talked on the use of pine needle for specialty application. He said that these needles can be used for purification of water. Dr. S.K. Joshi, representative of NGO, SEWAHAR elaborated upon the role of community participation in management of forest fire. He said that there is need of active involvement of local people/ developmental Functionaries/ youth clubs/Mahila Mandels and voluntary organizations for the successful implementation of fire management programmes.

Shri M.L. Thakur, Division Fire Officer, Himachal Pradesh Department of fire services gave a presentation on safety measures for control and management of fire and linked it with forest fires. He said that fire lines can be used to control the forest fires.

Sh. Alok Prem Nagar, IFS, CCF, HPSFD, talked about forest fire in Himachal Pradesh and it's over view. He stressed upon of enrolling volunteers in controlling forest fires and standardising system of damage assessment due to forest fires.

The plenary session was chaired by Sh. Alok Prem Nagar, CCF, HPSFD. He hoped that what the participants have learnt here, will definitely be implemented in the field during the incidences of forest fires. The seminar finally concluded with a formal vote of thanks by Sh. S.P. Negi, IFS, Conservator of Forests of the Institute. He thanked Shri Amar Chand Sharma, IFS, Chief Guest of the Inaugural Session and Shri Alok Prem Nagar, IFS, Chief Guest for the Plenary Session for sparing their valuable time and sharing their experience with the participants. He also thanked all the presenters for their valuable contribution and the participants for attending this important event.

Recommendations has been emerged from the seminar:

1. There is a great need of compilation of database from various agencies and analysis of data-base for standardizing damage assessment due to forest fire. There is also need of doing intensive research studies on ecological and economical effect of forest fires.

2. Awareness campaign among different stakeholders to take preventive measures before the beginning of the fire season. There should be effective campaign at national level on control of forest fire.

3. There is a need for setting up effective communication network for quick flow of information.

4. Regular seminars, workshops and practical trainings of frontline staff of Forest Departments and communities should be organized.

5. Legal provisions for fire prevention and control should be implemented strictly.
6. The value added product from needles of chir pine has great potential to raise the income of people and reduce fire hazard in the forests. There is a need of doing research on value addition of chir pine needles.
7. There should be community based Forest Fires Management System by involving JFM committees and forest protection committees.
8. There is a need of need of increasing the budget allocation for fire managemen**t** in the Forest Departments.

वनों में लगातार सूखा पड़ना आग लगने का मुख्य कारण

हिमाचल वन अनुसंधान की गोष्ठी में आग लगने के कारणों पर हुई चर्चा

शिमला : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में आयोजित कार्यशाला में भाग लेते अधिकारी। (नरेश)

शिमला, 8 फरवरी (जय): वनों में लगातार सूखा पड़ने के चलते धरती का तापमान अधिक बढ़ जाता है और आग लगने का यह मुख्य कारण है। सूखे के चलते चलती ट्रेन से निकलने वाली एक चिंगारी के साथ ही बीड़ी व सिगरेट को जंगलों में जलता हुआ फैंकने और कूड़े-कचरे में आग लगाने के बाद उसे न बुझाने से आग भड़क जाती है और इसके चलते जंगल खाक हो जाते हैं। हिमालयन वन अनुसंधान की शुक्रवार को आयोजित एकदिवसीय संगोष्ठी में वनों में लगने वाली आग के मुख्य कारणों पर चर्चा की गई। इस एकदिवसीय संगोष्ठी में हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अधिकारियों, वन अनुसंधान संस्थान देहरादून, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों और गैर-सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर सभी संस्थानों से आए प्रतिनिधियों ने इस विषय पर अपने सुझाव दिए। अमर चंद शर्मा प्रधान मुख्य अरण्यपाल वन प्रबंधन हिमाचल प्रदेश वन विभाग ने अपने संबोधन में कहा कि भारत के वनों में कई तरह की जैव विविधता मिलती है लेकिन ईंधन, चारे व लकड़ी की बढ़ती हुई मांग व वनों में लगने वाली आग जैव विविधता और वनों की उत्पादन क्षमता में कमी का मुख्य कारण है। जंगल में आग लगना एक आम बात है और पुराने समय से ही ऐसा होता रहा है। जंगल की आग पर नियंत्रण सहित वन प्रबंधन का जिम्मा राज्यों के वन विभागों के पास है।

इन विद्वानों ने दिए सुझाव

संगोष्ठी के दौरान डा. सुनील चन्द्रा उप निदेशक सिस्टम मैनेजमैंट भारतीय वन सर्वेक्षण देहरादून ने भारत में जंगलों की आग की स्थिति तथा इसका प्रबंधन व डा. जोईचिम स्कुमेरबेक जी.आई.जैड. शिमला ने वन की आग और आजीविका पर्यावरण पर वनों में लगने वाली आग का प्रभाव और जर्मनी से स्काइप पर वनों की आग की स्थिति और इसका नियंत्रण, डा. रणजीत कुमार वैज्ञानिक ने जंगलों में आग तथा इसका वैज्ञानिक प्रबंधन और डा. ओम बीर सिंह वरिष्ठ वैज्ञानिक वन अनुसंधान संस्थान देहरादून ने फायर फाइटर सुरक्षा उपकरण और वनों की आग बुझाने में इनका उपयोग विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वनों में आग लगने के लिए मानव अधिक जिम्मेदार है और ऐसे में इस दिशा में मानव को स्तर्क करने की जरूरत है।

पंजाब केसरी, 09 फरवरी, 2018

शिमला में जंगल बचाने पर मंथन

आग एवं प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी में विशेषज्ञों ने दिए अहम सुझाव

▪ दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान शिमला द्वारा गुरुवार को वनों की आग एवं इसका प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में डा. रणजीत सिंह, समूह समन्वयक अनुसंधान ने मुख्यातिथि, अमर चंद शर्मा प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वन-प्रबंधन), और संगोष्ठी में भाग लेने आए विभिन्न संस्थाओं से विषय-विशेषज्ञों का स्वागत व अभिनंदन किया। संगोष्ठी का शुभारंभ अमर चंद शर्मा, प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वन-प्रबंधन) वन विभाग ने किया। उन्होंने कहा कि ईंधन, चारे, लकड़ी की बढ़ती मांग व वनों में लगने वाली आग जैव विविधता और वनों की उत्पादन क्षमता में कमी का मुख्य कारण है। जंगल की आग पर नियंत्रण सहित वन प्रबंध का जिम्मा राज्यों के वन विभागों के पास है। इसको देखते हुए 'वन-आग' प्रबंध के लिए एक योजना तैयार करनी जरूरी है, ताकि इस संबंध में राज्य वन विभागों स्पष्ट दिशा-निर्देश मिल सकें। डा. सुनील चंद्रा, उप-निदेशक (सिस्टम मैनेजमेंट), भारतीय वन सर्वेक्षण, देहरादून न जंगलों की आग की स्थिति तथा इसका प्रबंधन, भगत राम, प्रदेश विश्वविद्यालय ने चीड़, जो जंगलों में लगने वाली आग का एक मुख्य कारण है, को उपयोग में लाने, डा. जोईचिम स्कुमेरबेक, जीआईजेड शिमला ने वन की आग और आजीविका-पर्यावरण पर वनों में लगने वाली आग का प्रभाव और जर्मनी से स्काइप पर वनों की आग की स्थिति और इसका नियंत्रण, डा. रणजीत कुमारने चीड़ के जंगलों में आग तथा इसका वैज्ञानिक प्रबंधन और डा. ओमबीर सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने फायर फाइटर सुरक्षा उपकरण और वनों की आग बुझाने में उनका उपयोग विषय पर महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। इसके अतिरिक्त अग्निशमन विभाग, हिमाचल प्रदेश के एमएल ठाकुर मंडलीय अग्निशमन अधिकारी ने आग के नियंत्रण और प्रबंधन के लिए सुरक्षा उपाय पर महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध की और इसे जंगलों में लगने वाली आग से भी जोड़ा। कार्यक्रम के पूर्ण सत्र की अध्यक्षता अलोक प्रेम नागर, मुख्य अरण्यपाल (परियोजना), हिमाचल प्रदेश वन विभाग ने की। कार्यक्रम के अंत में सत्य प्रकाश नेगी, अरण्यपाल, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने कहा कि इस संस्थान के लिए यह स्वभाग्य का दिन है कि आज हमने इस महत्त्वपूर्ण विषय पर संगोष्ठी की मेजबानी की है। विशेषज्ञों के सुझाव आने वाले दिनों में सहायक सिद्ध होंगे।

दिव्य हिमाचल, 09 फरवरी, 2018

शिमला में वनों में आग पर संगोष्ठी में वैज्ञानिकों ने दिए सुझाव

वैज्ञानिक तरीकों से रोकी जाए जंगल की आग

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

◆ हिमालयन वन अनुसंधान में आयोजित हुआ कार्यक्रम

वनों में आग लगने के बाद प्रबंधन पर हिमालयन वन अनुसंधान शिमला में शुक्रवार को एक संगोष्ठी आयोजित की गई। एक दिवसीय संगोष्ठी में हिमाचल प्रदेश वन विभाग अधिकारियों, वन अनुसंधान संस्थान देहरादून हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला, हिमाचल प्रदेश विश्वद्यालय के वैज्ञानिकों और गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर सभी संस्थानों से आए प्रतिनिधियों ने इस विषय पर अपने सुझाव दिए। कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ. रणजीत सिंह समूह समन्वयक अनुसंधान ने मुख्य अतिथि अमर चंद शर्मा प्रधान मुख्य अरण्यपाल वन प्रबंधन हिमाचल प्रदेश वन विभाग तथा संगोष्ठी में भाग लेने आए विभिन्न संस्थाओं से विषय विशेषज्ञों का स्वागत किया। इसके बाद अमर चंद शर्मा प्रधान मुख्य अरण्यपाल वन प्रबंधन हिमाचल प्रदेश वन विभाग ने अपने संबोधन में कहा कि भारत के वनों में कई तरह की जैव विविधता मिलती है। लेकिन ईंधन, चारे, लकड़ी की बढ़ती हुई मांग व वनों में लगने वाली आग जैव विविधता और वनों की उत्पादन क्षमता में कमी का मुख्य कारण है। जंगल में आग लगना एक आम बात है और पुराने समय से ही ऐसा होता रहा है। जंगल की आग पर नियंत्रण सहित वन प्रबंध का जिम्मा राज्यों के वन विभागों के पास है। इसको देखते हुए वन आग प्रबंध के लिए एक योजना तैयार करनी जरूरी है, ताकि इस संबंध में राज्य वन विभागों स्पष्ट दिशा-निर्देश मिल सके। संगोष्ठी के दौरान डॉ. सुनील चंद्रा उप निदेशक सिस्टम मैनेजमेंट भारतीय वन सर्वेक्षण देहरादून ने भारत में जंगलों की आग की स्थिति तथा इसका प्रबंधन, डॉ. जोईचिम स्कुमेरबेक जीआईजेड शिमला ने वन की आग और आजीविका पर्यावरण पर वनों में लगने वाली आग का प्रभाव और जर्मनी से स्काइप पर वनों की आग की स्थिति और इसका नियंत्रण, डॉ. रणजीत कुमार वैज्ञानिक ने जंगलों में आग तथा इसका वैज्ञानिक प्रबंधन और डॉ. ओमबीर सिंह वरिष्ठ वैज्ञानिक वन अनुसंधान संस्थान देहरादून ने फायर फाइटर सुरक्षा उपकरण और वनों की आग बुझाने में उनका उपयोग विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

हिमाचल वन अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित एकदिवसीय संगोष्ठी में भाग लेते अधिकारी व कर्मचारी।

हिमाचल दस्तक, 09 फरवरी, 2018

वनों की आग एवं इसका प्रबंधन विषय पर वैज्ञानिकों ने रखे विचार

शिमला | हिमालयन वन अनुसंधान शिमला की ओर से वीरवार को वनों की आग एवं इसका प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी हुई। इस संगोष्ठी में हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अधिकारियों, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों और गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। शुभारंभ में प्रधान मुख्य अरण्यपाल अमर चंद शर्मा ने कहा कि भारत के वनों में कई तरह की जैव विविधता मिलती है। लेकिन ईंधन, चारे, लकड़ी की बढ़ती हुई मांग व वनों में लगने वाली आग जैव विविधता और वनों की उत्पादन क्षमता में कमी का मुख्य कारण है। जंगल में आग लगना एक आम बात है और पुराने समय से ही ऐसा होता रहा है।

दैनिक भास्कर, 09 फरवरी, 2018

Sensitise people on forest fires: Official

SHIMLA: The Himalayan Forest Research Institute (HFRI) organised a seminar on Forest Fires and its Management, here on Thursday. The seminar was attended by officials from the State Forest Department, NGOs, researchers from the HPU, Shimla, and scientists and staff of HFRI. Inaugurating the seminar, Amar Chand Sharma, Principal Chief Conservator Forest (Management) said forest fire caused irreparable loss to the flora and fauna. “Sensitisation of common man is of utmost significance,” he said. TNS

(The Tribune, 09 February 2018)